हिन्दी में मार्क्सवाद

PAGE NO. 1
DATE 22.11.05

कार्ल मार्क्स ने 19वीं शदी के उत्तरार्द्ध में राजनीति, दर्शन, न्याय, धर्म, कला और साहित्य का विकास आर्थिक विकास पर निर्दिष्ट किया। पहली बार उन्होंने ही स्थापना की, कि हम जिस जमीन पर खड़े हैं और जिन भौतिक आवश्यकताओं के बीच संघर्षरत हैं साहित्य उनका पुरक है। मार्क्स ने अपने साहित्य और कला चेतन में सामाजिक आधार और वर्ग संघर्ष की लगातार चर्चा की है। रचनात्मक चेतना को एक सामाजिक उपज स्वीकार करने वाले मार्क्स ने यह खुले तौर पर घोषणा की है, कि सारी कलायें अपने समय के सामाजिक विकास और आर्थिक संघर्ष से अनुप्राणित होनी चाहिए। यदि कविता में सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों और आर्थिक जटिलताओं का चित्रण नहीं होती, उसमें मनुष्य के श्रम की कथा नहीं कही जाती है तो ऐसी कविता निश्चय ही हितकर नहीं हो (सकी) सकती। मार्क्स के साहित्य में यथार्थ का अर्थ सुदृढ़ताओं के विवेचन के समानान्तर सामाजिक जीवन की स्थापना है। मार्क्स ने विश्व मानवता को दो वर्गों में विभाजित किया है — शोषक वर्ग और शोषित वर्ग। वर्ण, जाति, धर्म, देश एवं सम्प्रदाय गत भेद उन्हें मान्य नहीं है। उन्होंने विश्व सभ्यता के इतिहास को चार भागों में बाँटा है —

(i) पहला युग दास प्रथा का युग था, जबकि श्रमिक की सब वस्तुओं पर उसके स्वामी का एकाधिकार था, श्रमिक तो दासवत था।

(ii) दूसरा सामंती प्रथा का युग है, जिसमें श्रमिक को व्यक्तिगत बातों की स्वतंत्रता मिली किन्तु बाकी सब पुर्ववत था।

(iii) तीसरा पूँजीवादी व्यवस्था का युग आया जिसमें मजदूर के व्यक्तित्व और उनके

Scanned with Cam

श्रम पर तो उसका अधिकार ही था, किन्तु उत्पादन और लाभ पर पूंजीपति का अधिकार बना रहा।

(iv) चौथा है- मार्क्सवादी युग जिसमें मजदूरों द्वारा उत्पादन के समस्त उपकरणों पर नियंत्रण होता था। और प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिश्रम के अनुरूप फल भी मिलता।

कार्लमार्क्स ने साम्यवादी व्यवस्था के स्थापना करना चाहा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने हिंसात्मक क्रांतिमय उपायों का समर्थन किया। मार्क्सवाद का उद्देश्य है- समाज में आर्थिक स्तर पर समानता स्थापित करना और इसकी सिद्धी के लिए शोषित वर्ग को शोषक वर्ग के विरुद्ध भड़काना है।

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी मार्क्सवादी समीक्षकों की एक लम्बी समर्थ कतार तैयार हुई जिसने मार्क्स की ही तरह वर्ग संघर्ष और द्वन्द्वात्मकता भौतिकवाद को साहित्य चिन्तन का मेरुदण्ड माना। मार्क्स के प्रभाव को शिवदान सिंह चौहान, प्रकाश चन्द्र गुप्त, मुक्तिबोध, डॉ० रामविलास शर्मा और डॉ० नामवर सिंह आदि के समीक्षा कर्म में देखा जा सकता है। सबसे पहले शिवदान सिंह चौहान ने ही 1935 के विशाल भारत में अपना लेख भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता लिखा था। यद्यपि मुक्तिबोध की ख्याति कवि के रूप में अधिक हुई है, लेकिन व्यावहारिक समीक्षा और परम्परा के मूल्यांकन की दृष्टि से उनकी मार्क्सवादी समीक्षा-प्रतिभा पर्याप्त आकर्षक रही है।

डॉ० रामविलास शर्मा ने हिन्दी में मार्क्सवादी चिंतन की निराला, भारतेन्दु, प्रेमचंद, और रामचन्द्र शुक्ल जैसे स्थापित

Scanned with Cam

रचनाकारों के संदर्भ में साकार किया। उन्होंने न केवल मार्क्सवादी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया अपितु मार्क्सवादी दृष्टि से हिन्दी साहित्य की समुची परम्परा की नई व्याख्या की। डॉ० नामवर सिंह ने छायावाद, नई कविता, नई कहानी आदि के संदर्भ में मार्क्सवादी समीक्षा को अत्यतम ऊँचाई दी। डॉ० नामवर सिंह ने न केवल हिन्दी आलोचना में प्रतिक्रियावादी तत्वों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया है. बल्कि मार्क्सवादी आलोचना के सामने आई चुनौतियों का साहसपूर्ण सामना भी किया है। छायावाद, नई कहानी कविता के नये प्रतिमान, इसकी परम्परा की खोज जैसे ग्रंथों में उनके मार्क्सवादी समीक्षाएँ धीरे-धीरे जनवादी समीक्षा का अभिधान भी ग्रहण कर लिया। मार्क्सवादियों का कहना है कि व्यक्ति समाज का अंग है, और समाज उसको सत्ता है। जबतक वह समस्त समाज के विकास और वृद्धि में उपयोगी है, तब तक उसका उतना ही मूल्य है. जितना किसी अन्य व्यक्ति का। अतएव सम्पत्ति का विभाजन व्यक्तिपरक न होकर व्यक्ति की सामाजिक उपयोगिता के आधार पर होनी चाहिए। निश्चय ही हिन्दी के मार्क्सवादी समीक्षा में सामाजिक, आर्थिक चुनौतियों के संदर्भ में अपनी नई राह तैयार की है। अपनी शक्ति और सीमाओं के साथ इस राह के समीक्षकों ने जन साहित्य का समर्थन किया है तभी आज यह मार्क्सवादी समीक्षा हिन्दी समीक्षा का केन्द्रीय स्वर बन सका है।

समाप्त

Scanned with Cam

① मार्क्सवाद के विचारों को तीन भागों में बाँटा गया है!- (i) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद,
(ii) मुल्य वृद्धि का सिद्धान्त,
(iii) विश्व सभ्यता की विकास यात्रा
② प्रगतिवाद मार्क्सवाद से प्रभावित है।
③ मुल्यवृद्धि के सिद्धान्त को चार भागों में बाँटा जा सकता है:- (क) कच्चा पदार्थ या मूल पदार्थ, (ख) स्थूल साधन (मशीन), (ग) श्रमिकों का श्रम, (घ) उत्पादन की मुल्य
④ विश्व सभ्यता की विकास- यात्रा को निम्न भागों में बाँटा गया है:-
(क) दास प्रथा, (ख) सामन्ती प्रथा,
(ग) पूँजीपति वर्ग का वर्चस्व
(घ) ~~x~~ (उत्पादन का मुल्य)
(घ) साम्यवाद की स्थापना।
⑤ साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना — मार्क्स का मूल उद्देश्य।

मनोविश्लेषणवाद

① मन की बातों को बतलाना मनोविज्ञान है।
② मन की बातों का विश्लेषण करना मनोविश्लेषणवाद है।
③ इलाचन्द्र जोशी जैनेन्द्र, अज्ञेय मनोविश्लेषणवादी हैं।
④ फ्रायड ने कामवासना (लिबिडो नाम दिया) को मनुष्य का आंतरिक शक्ति को प्रेरक माना है। ये मनोविश्लेषणवादी थे।
⑤ फ्रायड के अनुसार मन के तीन स्तर होते हैं।-
(i) चेतन मन, (ii) अचेतन मन, (iii) अद्धचेतन मन।
⑥ जैनेन्द्र की 'सुनीता' 'त्यागपत्र', अज्ञेय की 'शेखर एक जीवनी' इलाचन्द्र जोशी का 'जहाज का पंछी' 'प्रेत और छाया' - इन रचनाओं में चेतन-अचेतन का द्वन्द्व है।
⑦ एडलर मनोविश्लेषणवादी थे। इन्होंने मनुष्य की अतिपोषक शक्ति को माना है।
⑧ युग मनोविश्लेषणवादी थे। इन्होंने मनुष्य को आंतरिक प्रेरक शक्ति 'कुंठा' को माना। इनका कहना था कि जब कोई बात चेतन मन से अचेतन मन में चली जाती है, और फिर ~~बार~~ याद करने पर भी याद नहीं आने पर हमारे मन में कुंठा की भावना जन्म लेने लगती है।

Scanned with Cam